विज्ञान, टेक्नॉलॉजी और युद्ध

पी. बालाराम

इराक युद्ध की जड़ें अमेरिका की वैज्ञानिक, टेक्नॉलॉजीगत और आर्थिक श्रेष्ठता में देखी जा सकती हैं। इसी के बल पर विश्व जनमत को अनदेखा करते हुए वह कमोबेश एकतरफा ढंग से कार्यवाही कर सका। व्यापक जनसंहार के हथियारों पर नियंत्रण के हर प्रयास में अमरीका का रुख यह होता है कि बाकी सारे देशों को उन तकनीकों का विकास करने से परहेज करना चाहिए, जो स्वयं अमरीका को अंतर्राष्ट्रीय सम्बंधों के मामले में इतनी कारगर लगती हैं।

अपनी टेलीविज़न शृंखला *एसेंट ऑफ मैन* में जेकब ब्रोनोस्की पश्चिमी दुनिया में विज्ञान, संस्कृति और सभ्यता के विकास की टोह में सदियों का सफर तय करते हैं। ब्रोनोस्की के मुताबिक 'खानाबदोशी से स्थायी खेती की ओर परिवर्तन मानव के विकास में सबसे महत्वपूर्ण कदम था।' सभ्यता कई नदियों के किनारे विकसित हुई। अलबत्ता ब्रोनोस्की अपनी बौद्धिक व धार्मिक जड़ों के अनुरूप ओल्ड टेस्टामेंट का सहारा लेते हुए मध्य-पूर्व में फर्टाइल क्रिसेंट में खेती के विकास का ब्यौरा देते हैं। जेरिको के उनके विवरण से इस उपजाऊ भूमि के लिए हुए संघर्ष की झलक मिलती है। ब्रोनोस्की का अनुमान है कि 6000 ईसा पूर्व तक जेरिको एक कृषि आधारित बस्ती बन चुका था।

आज चन्द सहस्त्राब्दियों बाद दजला और फरात के तट एक बार फिर युद्ध की चपेट में हैं। कुछ सदियों बाद शायद इस युद्ध को पश्चिम के इतिहास का निर्णायक मोड़ कहा जाएगा। इराक का युद्ध एकदम एकतरफा, तर्कहीन और अनावश्यक रूप से निर्मम रहा है। यह युद्ध, कम से कम औपचारिक रूप से, जल्दी समाप्त हुआ तो इसलिए कि टेक्नॉलॉजी के लिहाज़ से अमरीकी व ब्रिटिश फौजें कहीं बेहतर थीं। इनके साथ चन्द छोटे-मोटे साझेदार थे, जिन्हें मिलाकर तथाकथित 'गठबंधन' बना था। इस गठबंधन ने एक संप्रभु राष्ट्र में घुसपैठ करते हुए विश्व जनमत की अपमानजनक उपेक्षा की। अहंकार के इस निर्लज्ज प्रदर्शन के कारण खोजने बहुत दूर जाने की ज़रूरत नहीं है।